हिरोशिमा एवं नागासाकी पर परमाणु बम विस्फोट
मानवता पर क्रूरता की ऊचाई - डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी

वर्धा, 6 अगस्त, 2015 मानव इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी पर 6 एवं 9 अगस्त को हुए परमाणु बम विस्फोट की घटना है। आज संपूर्ण विश्व को यह एहसास है कि भारत में कोई गांधी नाम का व्यक्ति भी हुआ था जिसने अहिंसा एवं शांति के लिए काम किया। उक्त विचार डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने बतौर मुख्य वक्ता के रुप में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के विकास एवं शांति अध्ययन विभाग में आयोजित 'हिरोशिमा दिवस' पर विचार गोष्ठी में श्रद्धांजलि देते हुए व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विकास एवं शांति विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि 70 वर्ष पूर्व हुए हिरोशिमा एवं नागासाकी पर परमाणु बम विस्फोट विश्व इतिहास में सर्वाधिक जघन्य अपराध एवं मानवता पर क्रूरता की ऊचाई को पार करने वाली घटना है। यह विचारणीय है कि परमाणु विस्फोट के कुछ समय में ही अगर लाखों लोग मर गए और बाद के काल तक कई पीढियाँ विकलांग पैदा होती रही हैं तो आज के समय में तो उससे कई गुना ज्यादा शक्तिशाली बम तैयार है। उन्होंने आगे महात्मा गांधी के द्वारा 'हरिजन' के फरवरी 1946 के अंक का उल्लेख करते हुए गांधी के कथन को उद्दित किया कि अणु बम की भीषण त्रासदी से हम यह सीख ले सकते हैं कि हिंसा का खात्मा प्रतिहिंसा से नहीं होता। डॉ. मोदी ने कहा कि वैश्विक पक्ष को देखा जाय तो 'शक्ति के संतुलन' की बात की जाती है। अगर भारतीय पक्ष को देखें 'बसुधैव कुटुंबकम' की बात की जाती है। वहीं चर्चिल की बात करते हुए उन्होंने कहा कि चर्चिल के हर सिगरेट के छल्ले में एक युद्द की कल्पना होती थी।

इस अवसर पर भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के डॉ. हुलगप्पा हुनगुंद ने कहा कि आज संपूर्ण समाज में जाति, धर्म, सीमा आदि के लिए लड़ाई हो रही है आवश्यकता है सौहार्द विकसित करने की जिससे मानव कल्याण संभव हो सके।

डायस्फोरा विभाग के डॉ. मुन्ना लाल गुप्ता ने कहा कि पुर्नजागरण से लेकर अब तक जिस शांति को ढूँढ रहे हैं वह तो नहीं मिला पर हमने परमाणु बम का निर्माण कर लिया। अनुवाद एवं निर्वचन विभाग के डॉ. अनवर अ. सिद्दीकी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज दुनिया के सभी देश बड़े फक्र के साथ कहते हैं कि विश्व में शांति और एकता स्थापित होनी चाहिए वहीं दूसरी तरफ सभी देशों द्वारा राष्ट्रीय बजट में हथियार निर्माण के लिए बजट पास किया जाता है। तुलनात्मक साहित्य एवं हिन्दी विभाग के डॉ. रुपेश कुमार सिंह ने विज्ञान एवं उसके आविष्कार के उपयोग पर प्रकाश डाला। गोष्ठी में विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों द्वारा भी अपने-अपने विचारों को रखा गया जिसमें शिव गोपाल यादव, पंकज कुमार सिंह, राकेश विश्वकर्मा, मनोज कुमार, भारती, नीरज कुमार सिंह, कांचन बोस, राम कुमार सिंह एवं वीरेन्द्र गांधी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. चित्रा माली ने एवं धन्यवाद ज्ञापन भारती देवी ने किया।